INDIAN SCHOOL MUSCAT PRIMARY SECTION	
Story No: 3 & 4	**Name:**
Resource Person: Ms.Deepa Ranjith	**STD: IV Sec:**

अंधी बुढ़िया

एक बुढ़िया थी। बुढ़िया बहुत धनवान थी। उसकी सन्दूकें सोने चाँदी से भरी थीं। एक दिन अचानक बुढ़िया की आँखों में दर्द उठा और थोड़ी ही देर में वह अंधी हो गई। उसने तुरंत वैद्य को बुलवाया और कहा "यदि तुम मेरी आँखें अच्छी कर दोगे तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूँगी।"

वैद्य ने देखा बुढ़िया का घर जेवरों कपड़े और तरह तरह की कीमती वस्तुओं से भरा पड़ा था। उसने कुछ सोचा फिर बुढ़िया की आँख पर दवा रखकर पट्टी बाँध दी और चलते हुए कहा "इसी तरह रोज आकर मैं पट्टी बाँध जाया करूँगी। घबराओ मत तुम्हारी आँखें कुछ दिनों में अच्छी हो जाएँगी। चलते समय वैद्य ने दवाओं की एक थैली जेब में डाल ली।

दूसरे दिन भी वह आया और पट्टी बाँधकर जाते समय कुछ कपड़े और ज़ेवर उठा ले गया। इस तरह एक महीना बीत गया। वैद्य रोज़ पट्टी बदलने के बहाने आकर बुढ़िया के घर से कुछ न कुछ चुराकर ले जाता। जब वैद्य ने सब कुछ चुरा लिया उसने बुढ़िया की आँखें ठीक कर दी। वैद्य ने कहा "आपकी आँखें ठीक हो गई है लाओ मेरा इनाम। बुढ़िया की आँखें सचमुच ठीक हो गई थी। जब उसने अपनी घर की हालत देखी तो समझ गई कि वैद्य ने उसके साथ धोखा किया है। वैद्य ने फिर कहा "लाओ मेरा इनाम।" तब बुढ़िया बोली "कैसा इनाम मेरी आँखें तो अब तक ठीक नहीं हुई हैं। वैद्य समझ गया कि बुढ़िया उसे कुछ नहीं देने वाली। वह बुढ़िया को न्यायाधीश judge के पास ले गया। न्यायाधीश ने पूछा "बुढ़िया तू वैद्य के पैसे क्यों नहीं देती?"

बुढ़िया बोली "महाशय मैं तो अंधी की अंधी ही रही फिर पैसे किस बात के?" वैद्य ने उत्तर दिया "नहीं महाशय। बुढ़िया झूठ बोलती है। यह अब सब कुछ देख सकती है।" बुढ़िया बोली "महाशय मेरी आँखें जब ठीक थी तो मेरा घर सोने और चाँदी से भरा था मेरी आँखों पर पट्टी बाँधकर इस वैद्य ने मुझे लूट लिया। जब मैं वापस अपने घर को पैसों से भरा देखूँगी तभी समझूँगी की मेरी आँखें ठीक हो गई है। न्यायाधीश सारी बातें समझ गया और उसने बुढ़िया को सारा माल वापिस दिलवा कर वैद्य को जेल भिजवा दिया।

कोई किसी का नौकर नहीं

एक राजा बहुत घमंडी था। वह सब लोगों को अपना नौकर समझता था। एक दिन राजा अपने मंत्री से बात कर रहा था "देखो मंत्री मैं कितना बड़ा राजा हू सब लोग मेरे नौकर है। सब मेरे लिए काम करते हैं और मेरा आदेश मानते हैं।"

मंत्री ने कुछ सोचकर कहा "नहीं महाराज आप गलत कह रहे हैं। आपका कोई नौकर नहीं है। सब एक दूसरे के लिए काम करते हैं। सब एक दूसरे के नौकर हैं।"

यह सुनकर राजा आग बबूला हो उठा "क्या कहते हो कोई किसी का नौकर नहीं सब एक दूसरे के नौकर है क्या मैं तुम्हारा नौकर हू क्या मैं तुम्हारे लिए काम करता हू यदि यह बात सच है तो आज ही तुम्हें बताना होगा कि मैं तुम्हारे लिए क्या काम करता हू नहीं तो कल सुबह तुम्हें फासी दे दी जाएगी।

मंत्री बहुत बूढ़ा था। छड़ी के सहारे चलता था। राजा की बात सुनकर चुपचाप सोचने लगा। तभी एक भिखारी उधर आया। बेचारा भूख प्यास से थककर चूर हो रहा था।

राजा घमंडी तो बहुत था किसी को दुखी देखकर उसे दया आ जाती थी।

भिखारी की दशा देखकर राजा का मन पिघल गया। उसने मंत्री से कहा "इस भिखारी को बुलाकर कुछ खाने को दे दो।"

मंत्री छड़ी के सहारे सीढ़ियों पर उतरता हुआ भिखारी को बुलाने चला। किंतु छड़ी फिसल जाने से वह सीढ़ियों पर लुढ़क गया। मंत्री को गिरता देख राजा दौड़ पड़ा और उसे सहारा देकर उठाते हुए पूछा "कहीं चोट तो नहीं आई" मंत्री ने कहा "नहीं चोट तो नहीं लगी। आप मुझे मेरी वह छड़ी उठाकर दे दीजिए। राजा ने मंत्री को उसकी छड़ी उठाकर दे दी। मंत्री ने भिखारी को बुलवाकर उसे खाना दिलवा दिया। तब ज़ोर से हसते हुए मंत्री ने कहा "देखा महाराज आपने मेरा काम किया। मेरी छड़ी उठाकर दे दी। मैंने छड़ी के सहारे जाकर भिखारी को बुलाया।"

"इसी तरह हम सब एक दूसरे के लिए काम करते हैं। कोई किसी का नौकर नहीं है। राजा यह सुनकर चकित रह गया और उसने मंत्री को खूब सारा ईनाम दिया।